17 अगस्त 2012, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J.P.C / FN-32 / 2012-14

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे

जी-जागरण पर

प्रतिदिन प्रात: 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 35, अंक : 10 सम्पादक : पण्डित रतनचन्द भारिल्ल आजीवन शुल्क : 251 रुपये

अगस्त (द्वितीय), 2012 (वीर नि. संवत्-2538) सह-सम्पादक : पण्डित संजीवकुमार गोधा वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

तीर्थधाम मंगलायतन में डॉ. भारिल्ल

मंगलायतन-अलीगढ (उ.प्र.) : यहाँ तीर्थधाम मंगलायतन में दिनांक 28 जुलाई से 7 अगस्त तक क्रमबद्धपर्याय पर विशेष शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में अध्यापन हेतु पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली विशेष रूप से आये हुये थे, जिन्होंने प्रतिदिन तीनों समय 3-3 घंटे छात्रों को क्रमबद्धपर्याय विषय का विस्तृत अध्ययन कराया।

इसी दौरान पवनजी के स्वास्थ्य की कुशलक्षेम पूछने हेतु दिनांक 5 से 7 अगस्त को तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल मंगलायतन पहुँचे और उनके द्वारा क्रमबद्धपर्याय विषय पर 3 विशेष व्याख्यानों का लाभ मिला। डॉ. भारिल्ल ने बताया कि क्रमबद्धपर्याय जिनागम का चर्चित एवं अत्यन्त महत्वपूर्ण विषय है, जिसमें निश्चय-व्यवहार, निमित्त-उपादान आदि सभी सिद्धांत समा जाते हैं। प्रत्येक वस्तु निश्चित क्रमानुसार परिणमित होती है। किस वस्तु में, किस समय कौनसी पर्याय उत्पन्न होगी, यह निश्चित है। क्रमबद्धपर्याय वस्तु के परिणमन की व्यवस्था है। सर्वज्ञता के दर्पण में वस्तु के परिणमन की क्रमबद्ध व्यवस्था को सहज देखा जा सकता है। कोई भी वस्तु किसी के आधीन नहीं है। वह अपनी स्वाधीन योग्यतानुसार ही परिणमित होती है।

शिविर में प्रात: पूजन विधान के उपरान्त गुरुदेवश्री का सी.डी. प्रवचन भी क्रमबद्धपर्याय पर ही चलाया गया। सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति का आयोजन किया गया। इस शिविर में ब्र. कैलाशचंदजी 'अचल' ललितपुर, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, पण्डित अशोकजी लुहाड़िया बिजौलिया, पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन, पण्डित सुधीरजी शास्त्री, डॉ. सतीशजी जैन एवं श्री विनीतजी जैन इत्यादि विद्वान भी उपस्थित थे।

आध्यात्मिक शिक्षण शिविर संपन्न

कोलारस-शिवपुरी (म.प्र.) : यहाँ होटल फूलराज परिसर स्थित श्री आदिनाथ जिनालय में दिनांक 15 से 22 जुलाई तक आध्यात्मिक शिक्षण शिविर एवं श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री खनियांधाना, पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन, पण्डित अनिलजी शास्त्री 'धवल' भोपाल, पण्डित अमितजी शास्त्री लुकवासा, पण्डित सुकुमालजी शास्त्री लुकवासा, पण्डित देवेन्द्रजी मंगलार्थी, पण्डित मांगीलालजी कोलारस, पण्डित गिरनारीलालजी कोलारस एवं पण्डित किशनमलजी कोलारस के प्रवचनों व कक्षाओं का लाभ मिला।

शिविर के ध्वजारोहणकर्ता श्री महावीरप्रसादजी जैन 'डबरा' थे। शिविर में लगभग 500-600 लोगों ने धर्मलाभ लिया।

विधि-विधान के संपूर्ण कार्य ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री एवं पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन के निर्देशन में पूर्ण हुये।

युवा/बाल व्यक्तित्व विकास शिविर संपन्न

उदयपुर (राज.) : यहाँ आदर्श नगर गायरियावास में श्री कुन्दकुन्द कहान वीतराग-विज्ञान शिक्षण समिति एवं अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन उदयपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 10 से 17 जून तक युवा/बाल व्यक्तित्व विकास शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित अजितजी शास्त्री अलवर, पण्डित प्रकाशचंदजी छाबड़ा इन्दौर, डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित खेमचंदजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित मनीषजी शास्त्री रहली एवं पण्डित निलयजी शास्त्री आगरा द्वारा प्रवचनों एवं प्रौढकक्षा का लाभ मिला। बाल कक्षाओं में पण्डित ऋषभजी शास्त्री अमरकोट, पण्डित निलयजी शास्त्री, पण्डित नीलेशजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित आशीषजी शास्त्री टीकमगढ, पण्डित गजेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित प्रक्षालजी शास्त्री, पण्डित तपिशजी शास्त्री, पण्डित जयेशजी शास्त्री, पण्डित मयंकजी शास्त्री, पण्डित मेघवीरजी शास्त्री, पण्डित प्रशान्तजी शास्त्री, पण्डित अभिषेकजी शास्त्री आदि विद्वानों का सहयोग प्राप्त हुआ। कक्षाओं का संचालन डॉ. महावीरजी शास्त्री द्वारा किया गया।

शिविर में 170 तीर्थंकर विधान का भी आयोजन किया गया। विधि-विधान के संपूर्ण कार्य पण्डित अजितजी शास्त्री अलवर द्वारा संपन्न हुये।

निर्देशक पण्डित राजकुमारजी शास्त्री एवं पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री थे। संयोजक डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री थे। **- कन्हैयालाल दलावत**

डॉ. भारिल्ल दर्शन विज्ञान विभाग के डीन नियुक्त

विश्वविद्यालय के स्तर पर सभी लोग जैनदर्शन का अध्ययन कर सकें, श्री पवनजी जैन मंगलायतन की इस हार्दिक भावना को देखते हुए पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, तीर्थधाम मंगलायतन एवं मंगलायतन विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान में एक विस्तृत योजना तैयार की गई, जिसके अन्तर्गत जैनधर्म का विशिष्ट ज्ञान प्राप्त करने के इच्छुक विद्यार्थी उसका क्रमपूर्वक एवं व्यवस्थित अध्ययन कर सकते हैं। इस अध्ययन के साथ-साथ विश्वविद्यालय द्वारा डिग्री भी प्रदान की जायेगी।

इसी क्रम में मंगलायतन विश्वविद्यालय में दर्शन-विज्ञान विभाग की स्थापना की गई और इस विभाग के प्रथम ऑनरेरी डीन के रूप में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल को नियुक्त किया गया। इस विभाग के पूर्णकालिक निर्देशक के रूप में श्री जयन्तीभाई जैन चेन्नई अपनी सेवाएँ प्रदान करेंगे। इसके अलावा पण्डित देवेन्द्रजी बिजौलिया का सहयोग भी इस विभाग के विकास में प्राप्त होगा। इस विभाग में जैनदर्शन के अनेक रेग्यूलर डिग्री कोर्स, सर्टिफिकेट कोर्स, डिप्लोमा कोर्स एवं पत्राचार द्वारा डिग्री कोर्स चलाये जाने की योजना है। इसके लिये आवश्यक शासकीय कार्यवाही प्रारंभ कर दी गई है और अतिशीघ्र यह कार्य प्रारम्भ हो जायेगा। इस कार्य में मंगलायतन विश्वविद्यालय के कुलपति श्री सतीशजी जैन का विशिष्ट योगदान भी सराहनीय हैं।

सम्पादकीय –

पंचास्तिकाय : अनुशीलन

82 – पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

गाथा – १४७

विगत गाथा में ध्यान के स्वरूप का कथन किया।

अब प्रस्तुत गाथा में बंध पदार्थ का व्याख्यान करते हैं।

मूल गाथा इसप्रकार है –

जं सुहमसुहमुदिण्णं भावं रत्तो करेदि जदि अप्पा।
सो तेण हवदि बद्धो पोग्गलकम्मेण विविहेण।।१४७।।

(हरिगीत)

आतमा यदि मलिन हो, करता शुभाशुभ भाव को।
तो विविध पुद्गल कर्म द्वारा, प्राप्त होता बन्ध को।।१४७।।

यदि आत्मा रक्त (विकारी) वर्तता हुआ उदित शुभाशुभ भावों को करता है तो वह आत्मा उन भावों उन भावों के निमित्त से विविध पुद्गल कर्मों से बद्ध होता है।

आचार्यश्री अमृतचन्द्र देव टीका में कहते हैं कि ''यदि वास्तव में यह आत्मा अन्य के (पुद्गल कर्म के) आश्रय से अनादिकाल से रक्त रहकर कर्मोदय के प्रभाव सहित वर्तने से प्रगट होनेवाले शुभ या अशुभ भाव को करता है, तो वह आत्मा उस निमित्त भूत भाव द्वारा विविध पुद्गल कर्मों से बद्ध होता है। इसलिए यहाँ ऐसा कहा है कि मोह–राग–द्वेष द्वारा स्निग्ध जीव के शुभ या अशुभ परिणाम भावबन्ध हैं तथा उन शुभाशुभ परिणामों के निमित्त से शुभ–अशुभ कर्म रूप परिणत पुद्गलों का जीव के साथ अन्योन्य अवगाहन द्रव्यकर्म है।

इसी भाव को कवि हीरानन्दजी काव्य में कहते हैं –

(दोहा)

उदित शुभाशुभ भाव कौं, करे सरागी जीव।
तिसही करि नूतन बंधे, पुद्गल कर्म सदीव।।१५६।।

(सवैया इकतीसा)

आत्मा अनादि–रागी, परभाव पागी तातैं,
औदयिकभाव मांहि नवा भाव धारै है।
ताही भाव–कारन तैं पुग्गल विविध कर्म,
एकमेव रूप होइ बंधन समारै है।।
तातैं राग–दोस–मोह–चिकनाई भावबंध,
कारण निमित्त रूप लोककाज सारै है।
कर्मरूप पुग्गल औ जीवदेस एकमेक,
द्रव्य बंध सोइ लसै ज्ञानी भेद पारै है।।१५७।।

कवि उक्त पद्यों में कहते हैं कि सरागी जीव जो शुभाशुभ भाव करता है, उनका निमित्त पाकर द्रव्यकर्मों का बंध होता है।

आत्मा अनादि से रागी हआ परभावों में रचता–पचता है, इसकारण औदयिक भावों में नये भाव धारण करता है। उन भावों के कारण से विविध पौद्गलिक कर्म आत्मा से एक–मेक होकर बंधते हैं। फिर उनसे मोह–राग–द्वेष रूप होकर भाव कर्म बंधते हैं। उस भावबंध से कर्मरूप पुद्गल बंधते हैं, फिर दोनों एकमेक होकर कर्म प्रक्रिया चलती है। ज्ञानी दोनों के भेद को जानकर समता रखते हैं।

गुरुदेव श्री कानजीस्वामी अपने व्याख्यान में कहते हैं कि ''आत्मा ज्ञान स्वभावी है, उससे चूककर जो अज्ञान भाव से पुण्य–पाप एवं राग–द्वेष रूप भाव होते हैं वे भाव बन्ध हैं, विकार परिणाम हैं। उनके निमित्त से जो जड़ कर्म बंधते हैं, वे द्रव्यकर्म हैं। ज्ञानी दोनों यथार्थ जानता है।''

तात्पर्य यह है कि आत्मा अनादि अविद्या के कारण पर के सम्बन्ध से मोही होता है तथा कर्म के उदय के निमित्त से शुभाशुभभाव करता है।

यद्यपि जीव एवं कर्म के बीच अत्यन्ताभाव है; किन्तु अपने स्वभाव को चूककर पर में सजग हुआ तथा निमित्ताधीन होकर जीव जो रागादि भाव करता है, वह भावबंध है। ज्ञानी दोनों को यथार्थ जानता है।●

डॉ. भारिल्ल के वीडियो प्रवचन उपलब्ध

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा ग्रन्थाधिराज समयसार के कर्ताकर्माधिकार के 18 डीवीडी में 108 प्रवचन, पुण्य–पाप अधिकार व संवर अधिकार के 5 डीवीडी में 47 प्रवचन एवं आस्रव अधिकार के 2 डीवीडी में 18 प्रवचन उपलब्ध हैं। **प्राप्ति हेतु संपर्क :** ए–4, बापूनगर, जयपुर फोन : 0141–2705581, 2707458

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

12 से 19 सितम्बर 2012	मुम्बई	श्वेताम्बर पर्युषण
19 से 29 सितम्बर 2012	नागपुर	दशलक्षण महापर्व
30 सितम्बर	दुर्ग	--------
1 अक्टूबर	रायपुर	क्षमावणी
21 से 30 अक्टूबर 2012	जयपुर	शिक्षण शिविर
3 नवम्बर 2012	अलीगढ	दीक्षान्त समारोह
10 से 14 नवम्बर	देवलाली	दीपावली
24 से 29 नवम्बर	सम्मेदशिखर	पंचकल्याणक
25 से 30 दिसम्बर	भीलवाड़ा	पंचकल्याणक

जयपुर शिविर का हार्दिक आमंत्रण

दिनांक 21 से 30 अक्टूबर 2012 तक पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट द्वारा 15वाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर श्री टोडरमल स्मारक भवन में आयोजित होने जा रहा है। आप सभी को पधारने हेतु हार्दिक आमंत्रण।

जो महानुभाव शिविर का लाभ लेने हेतु जयपुर पधार रहे हैं, वे अपने आगमन की पूर्व सूचना जयपुर कार्यालय को अवश्य भेजें, ताकि आवास व भोजन की समुचित व्यवस्था की जा सके।

दशलक्षण महापर्व में धर्म प्रभावनार्थ कहाँ-कौन ?

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी दिनांक 19 सितम्बर 2012 से प्रारम्भ हो रहे दशलक्षण महापर्व में समाज के आमंत्रण पर तत्त्वप्रचारार्थ विद्वान भेजे जा रहे हैं। पर्व के प्रारंभ होने में लगभग 33 दिन का समय शेष है, तथापि दिनांक 13 अगस्त 2012 तक हमारे पास 390 स्थानों से आमंत्रण प्राप्त हो चुके हैं और अभी भी अनेक स्थानों से आमंत्रण प्राप्त हो रहे हैं। दिनांक 13 अगस्त 2012 तक लिये गये निर्णयानुसार अब तक लगभग 326 स्थानों पर ही विद्वान निश्चित हो सके हैं; शेष स्थानों पर विद्वान निश्चित करना बाकी है। अभी तक तैयार सूची यहाँ प्रकाशित की जा रही है –

विशिष्ट विद्वानों में – 1. बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' कोटा : कोटा, **2. डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर :** नागपुर, **3. पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल जयपुर :** विदिशा (किला अन्दर), **4. पण्डित डॉ. उत्तमचन्दजी जैन सिवनी :** राजकोट, **5. ब्र. यशपालजी जैन जयपुर :** सिलवानी, **6. पण्डित ज्ञानचन्दजी जैन विदिशा :** सोनागिर, **7. ब्र. सुमतप्रकाशजी जैन खनियांधाना :** दादर–मुम्बई, **8. पण्डित विमलचंदजी झांझरी उज्जैन :** जयपुर (आदर्शनगर), **9. ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद :** नई दिल्ली, **10. ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री खनियांधाना :** भागलपुर, **11. पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर :** इन्दौर (साधनानगर), **12. पण्डित अभयकुमारजी देवलाली :** बड़ौदा, **13. पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा इन्दौर :** जयपुर, **14. ब्र. हेमचन्दजी 'हेम' देवलाली :** अजमेर (वी.वि. भवन), **15. पण्डित कपूरचन्दजी 'कौशल' भोपाल :** इन्दौर (लश्करी मंदिर), **16. पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर :** खुरई, **17. पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन :** देवलाली, **18. पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी जैन आगरा :** भीलवाड़ा, **19. पण्डित शैलेशभाई शाह तलौद :** तलौद, **20.पण्डित राकेशजी शास्त्री नागपुर :** दिल्ली (विश्वासनगर), **21.पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर :** अहमदाबाद (नवरंगपुरा), **22. पण्डित अशोकजी लुहाड़िया मंगलायतन :** अलीगढ़, **23. पण्डित दिनेशभाई शहा मुम्बई :** मुम्बई, **24. वि. उज्ज्वला शहा मुम्बई :** मुम्बई, **25. पण्डित सुनीलजी जैनापुरे राजकोट :** राजकोट, **26. पण्डित अनिलकुमार शास्त्री भिण्ड :** बड़नगर, **27. ब्र. कैलाशचन्द्रजी अचल :** कारंजा, **28.डॉ. दीपक जैन शास्त्री जयपुर :** मंगलायतन।

विदेश में – पण्डित ज्ञायक शास्त्री मुम्बई : नैरोबी (अफ्रीका)।

मध्यप्रदेश प्रान्त

1. अशोकनगर : पण्डित ऋषभकुमारजी इंजी. इन्दौर, **2. जबलपुर (बड़ा फुहारा) :** विदुषी ब्र. कल्पनाबेन सागर, **3. भोपाल (कोहेफिजा) :** पण्डित सुदीपकुमारजी इंजी. बीना, **4. बीना :** पण्डित विक्रांतजी शास्त्री सोलापुर, **5. रतलाम (आदिनाथ चैत्यालय) :** ब्र. सुनीलजी शिवपुरी, **6. बड़नगर :** पण्डित अनिलजी भिण्ड, **7. इन्दौर (पलासिया) :** पण्डित सुबोधजी सिवनी, **8. उज्जैन :** पण्डित श्रेणिक जबलपुर, **9. गुना (वीतराग–विज्ञान) :** पण्डित रीतेश शास्त्री डडूका, **10. भोपाल (चौक) :** श्री मनोजकुमारजी जबलपुर, **11. भिण्ड (महावीर चौक) :** पण्डित नीतेश शास्त्री आरोन, **12. टीकमगढ़ :** पण्डित प्रतीक शास्त्री जबलपुर, **13. बदरवास :** पण्डित नीतेश शास्त्री कोटा, **14. गढ़ाकोटा :** पण्डित विवेक शास्त्री कोटा, **15. सागर (महावीर जिनालय) :** ब्र. बासन्ती बेन देवलाली, **16. कोलारस (चौधरी मौहल्ला) :** पण्डित अनुराग शास्त्री भगवां वापी, **17. ग्वालियर (सोडा का कुआँ) :** पण्डित सुरेशचंदजी टीकमगढ, **18. इन्दौर (रामाशा मन्दिर) :** पण्डित विपिनजी शास्त्री मुम्बई, **19. भोपाल (कस्तूरबानगर) :** पण्डित सतीशजी जैन पिपरई, **20. बेगमगंज :** पण्डित विनोदकुमारजी जैन गुना, **21. विदिशा (किला अन्दर) :** पण्डित सर्वज्ञजी भारिल्ल जयपुर, **22. केसली :** विदुषी पुष्पा जैन खंडवा, **23. जावरा :** पण्डित सुनीलकुमारजी शास्त्री प्रतापगढ़, **24. भिण्ड (देवनगर) :** पण्डित नेमीचन्दजी जैन ग्वालियर, **25.बण्डा :** पण्डित हुकमचन्दजी सिंघई राघौगढ़, **26.चन्देरी :** पण्डित कैलाशचंदजी महरौनी, **27.अम्बाह :** पण्डित प्रमोद शास्त्री टामटिया, **28.जबेरा :** पण्डित नागेशजी पीड़ावा, **29.मौ (बड़ा मन्दिर) :** पण्डित अंकित शास्त्री सरल खनियांधाना, **30.शहडोल :** पण्डित राहुलजी जैन मौरानीपुर, **31.बडनगर :** पण्डित अनिलकुमारजी पाटौदी, **32.शाहगढ़ :** पण्डित नन्दकिशोरजी गोयल विदिशा, **33.सागर (तारण–तरण) :** डॉ. राजेश शास्त्री विदिशा, **34.शिवपुरी (शान्तिनाथ मन्दिर) :** पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जैन मुरैना, **35.शिवपुरी (परमागम मन्दिर) :** पण्डित आशीष शास्त्री भिण्ड, **36.इन्दौर (गांधीनगर) :** पण्डित अरुणजी मोदी, सागर, **37.मन्दसौर (गोल चौराहा) :** पण्डित राजेन्द्रकुमारजी पिपरई, **38. मगरौन :** पण्डित शेषकुमारजी उभेगांव, **39.बीड :** पण्डित सौरभ शास्त्री खड़ैरी, **40.मन्दसौर (कालाखेत) :** पण्डित सुनीलजी शास्त्री नाके निम्बाहेड़ा, **41.हरदा :** विदुषी कुसुमलताजी जैन, **42.शुजालपुर मण्डी :** पण्डित कैलाशचंदजी अशोकनगर, **43.शहापुर (बुरहानपुर) :** पण्डित अनुराज शास्त्री फिरोजाबाद, **44.गौरझामर :** विदुषी ब्र. विमलाबेन जयपुर, **45.सनावद (सीमंधर) :** पण्डित विनोदजी जैन जबेरा, **46. नरवर :** पण्डित चंदुलालजी जैन कुशलगढ, **47. रांझी (जबलपुर) :** पण्डित राजेश शेठ मुम्बई, **48.आरोन :** पण्डित प्रकाशचंदजी झांझरी उज्जैन, **49.निसईजी (मल्हारगढ़) :** पण्डित कपूरचन्दजी भायजी सागर, **50.निसईजी (मल्हारगढ़) :** पण्डित रतनलालजी होशंगाबाद, **51.मकरोनिया (सागर) :** पण्डित महेन्द्रकुमारजी शास्त्री भिण्ड, **52.बड़गाँव (कटनी) :** पण्डित प्रमोदजी शास्त्री कोटा, **53. सिवनी :** पण्डित महेशचंदजी ग्वालियर, **54. आकाझिरी :** पण्डित विनोदजी मोदी दलपतपुर, **55. कोलारस (आदिनाथ) :** पण्डित अखिलेश शास्त्री सागर, **56. इन्दौर (विजयनगर) :** पण्डित चितरंजनजी छिंदवाड़ा, **57.इन्दौर (नरसिंगपुरा) :** पण्डित गौरवजी शास्त्री चन्देरी, **58. दलपतपुर :** विदुषी नयना शास्त्री खनियांधाना, **59. रहली :** पण्डित राकेशजी शास्त्री लिधौरा, **60. ग्वालियर (थाठीपुर) :** पण्डित नरेन्द्रकुमारजी जबलपुर, **61. विदिशा (अरिहंतविहार) :** ब्र. सुधाबेन उभेगाँव छिंदवाड़ा, **62. इन्दौर (टोडा की गोठ) :** पण्डित कमलकुमारजी जबेरा, **63.कटनी :** पण्डित दिलीपजी बाकलीवाल इन्दौर, **64.धार :** पण्डित लालारामजी एडवोकेट अशोकनगर, **65. परासिया :** पण्डित अभिषेक जैन उभेगाँव, **66.इन्दौर :** पण्डित सतीशचंदजी कासलीवाल, **67.सिंगोली :** पण्डित ज्ञानचन्दजी जैन झालावाड़, **68. सिंगोडी :** पण्डित मनोजजी शास्त्री करेली, **69. फोपनार :** पण्डित सुदीप शास्त्री घाटोल, **70.राधौगढ :** ब्र. अमितकुमारजी विदिशा, **71.पंधाना :** श्रीमती लतारोम अकोला, **72.पथरिया :** पण्डित मुरारीलालजी नरवर, **73.गुना (महावीर जिनालय) :** पण्डित मधुकरजी जलगांव, **74.अथाईखेड़ा (अशोकनगर) :** पण्डित राहुल शास्त्री, **75.इन्दौर (रामचन्द्र नगर) :** पण्डित अनिलजी इंजी. भोपाल, **76.निसईजी (मल्हारगढ़) :** विदुषी पुष्पाबहन हौशंगाबाद, **77.निसईजी (मल्हागढ़) :** पण्डित दर्शित शास्त्री जयपुर, **78.जबलपुर (तारण–तरण) :** पण्डित ज्ञायक शास्त्री सिलवानी, **79. करेली :** पण्डित निर्मलकुमारजी जैन एडवोकेट एटा, **80.मालनपुर :** पण्डित अंकुरजी शास्त्री मडदेवरा, **81.इन्दौर (राजेन्द्रनगर) :** पण्डित रविकुमारजी विदिशा, **82.भोपाल (सोनागिरी) :** पण्डित सुशीलकुमारजी शास्त्री, **83.भोपाल (अशोकागार्डन) :** पण्डित अंकुरजी शास्त्री देहगांव, **84.गुना :** पण्डित अनिलकुमारजी शास्त्री खनियांधाना, **85.ग्वालियर :** पण्डित अरविन्दजी शास्त्री गुरसौरा, **86.राधौगढ :** पण्डित

अशोकजी मांगुलकर कारंजा, **87.इन्दौर :** पण्डित अशोकजी शास्त्री रायपुर, **88.दमोह :** पण्डित प्रदीपकुमारजी शास्त्री, **89. द्रोणगिरी :** पण्डित पंकजजी शास्त्री हीरापुर, **90.सनावद :** पण्डित रीतेशजी शास्त्री, **91.बेरसिया :** पण्डित जीवनजी शास्त्री घुवारा, **92.** पण्डित सरदारमलजी जैन, **93. सोनागिरी :** पण्डित लालजीरामजी विदिशा, **94.भोपाल :** पण्डित सचिनजी शास्त्री बरेली, **95.बीना :** पण्डित अमितजी शास्त्री जबेरा।

महाराष्ट्र प्रान्त

1. मुम्बई (सीमंधर जिनालय) : पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर, **2. मुम्बई (बोरीवली) :** पण्डित अश्विनभाई शाह मलाड़, **3. मुम्बई (घाटकोपर) :** पण्डित नन्दकिशोरजी शास्त्री काटोल, **4. मुम्बई (भायंदर) वेस्ट :** पण्डित अनुभव शास्त्री कानपुर, **5. मुम्बई (मलाड) :** पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री खैरागढ़, **6. मुम्बई (दहीसर) :** विदुषी अनुप्रेक्षा शास्त्री मुम्बई, **7. मुम्बई (भूलेश्वर) :** पण्डित रमेशचंदजी बांझल इन्दौर, **8. मुम्बई (चेम्बुर) :** पण्डित सुमेरजी बेलोकर, **9. गजपंथा :** पण्डित अनिलजी धवल, **10. पुणे (स्वा. मंडल) :** पण्डित संजयकुमारजी सेठी जयपुर, **11. पुणे (सांगवी) :** पण्डित फूलचन्दजी मुक्किरवार हिंगोली, **12. जलगांव :** पण्डित बाबूभाई मेहता फतेपुर, **13. हिंगाली :** पण्डित मेहुलजी शास्त्री कोलकाता, **14. मलकापुर :** पण्डित आकेश जैन छिंदवाडा, **15. वाशिम (जवाहर कॉलोनी) :** पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, **16. कारंजा (लाड) :** ब्र. कैलाशचन्दजी अचल ललितपुर, **17. मुम्बई (एवरशाईनगर) :** पण्डित मनीषजी शास्त्री इन्दौर, **18. देवलाली :** पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी उज्जैन, **19. सेलू :** पण्डित विवेकजी शास्त्री पिड़ावा, **20. औरंगाबाद (सिडको) :** पण्डित दीपेशजी शास्त्री अमरमऊ, **21. मालशिरस :** पण्डित अभिनय शास्त्री कोटा, **22. पुणे (चिंचवड़) :** पण्डित जितेंद्र राठी नागपुर, **23. वरूड :** पण्डित गौरव शास्त्री कोटा, **24.वर्धा :** पण्डित अभिजीत अलगोडर शास्त्री मैसूर, **25. मालेगाँव :** पण्डित अनिरुद्ध शास्त्री कोटा, **26. वसमतनगर :** पण्डित जयेशजी रोकडे शास्त्री मालेगांव, **27. बेलोरा :** पण्डित शान्तिकुमार जैन कलमनूरी, **28.औरंगाबाद :** पण्डित विवेकजी छिन्दवाड़ा, **29. नातेपुते :** पण्डित प्रद्युम्नकुमारजी मु. नगर, पण्डित शीतल रायचन्द दोशी, **30. मुम्बई (वसई) :** पण्डित सौरभजी शास्त्री शहपुरा, **31. गजपंथा :** पण्डित सुरेन्द्रकुमारजी उज्जैन, **32. देऊलगाँवराजा :** पण्डित सिद्धार्थ दोशी रतलाम, **33. सदाशिवनगर :** पण्डित राहुल शास्त्री कोटा, **34. देवलाली :** पण्डित दीपक धवल भोपाल, **35. आर्वी (वर्धा) :** पण्डित बांकेबिहारी शास्त्री पोन्नूर, **36. अकोला :** पण्डित सौरभजी शास्त्री इन्दौर, **37. रामटेक :** पण्डित संयमजी शास्त्री सिलवानी, **38. नागपुर :** डॉ. मनीषजी शास्त्री खतौली, **39. कारंजा (गुरुकुल) :** पण्डित आलोकजी शास्त्री जालना, **40. कारंजा (वीरवाडी) :** पण्डित चिन्तामणजी शास्त्री औरंगाबाद, **41.सेलू :** पण्डित अशोकजी शास्त्री वानरे, **42. सेलू :** पण्डित अनंतजी शास्त्री शिरपुर, **43. हिंगोली :** पण्डित अमोलजी संघई शास्त्री, **44. सेनगांव :** पण्डित किरणकुमारजी शास्त्री उखलकर, **45. दानोली :** पण्डित किरणजी शास्त्री पाटील, **46. बाहुबली :** डॉ. नेमिनाथजी शास्त्री बालीकाई, **47.सांगली :** पण्डित प्रसन्नजी शास्त्री कोल्हापुर, **48. एलोरा :** पण्डित गुलाबचंदजी शास्त्री गोवर्धन, **49. एलोरा :** पण्डित प्रदीपकुमारजी शास्त्री, **50. जिन्तूर :** पण्डित प्रदीपजी शास्त्री महाजन, **51. सोलापुर :** पण्डित प्रशान्तजी मोहरे शास्त्री, **52. सोलापुर :** पण्डित रवीन्द्रजी शास्त्री कारंजा, **53. मुम्बई :** पण्डित हितेशजी शास्त्री चिंचोली, **54. मुम्बई :** पण्डित आदित्यजी शास्त्री खुरई, **55. मुम्बई :** पण्डित किशोरजी शास्त्री धोंगडे, **56. मुम्बई :** डॉ. आर.के. बंसल अमलाई।

राजस्थान प्रान्त

1. कोटा (रामपुरा) : पण्डित सचिन अकलूजवाले खनियाँधाना, **2. कोटा (इन्द्रविहार)**पण्डित संजयजी पुजारी इंजी. खनियाँधाना, **3. अलवर (मु. मंडल) :** पण्डित जयकुमारजी जैन बारावाले कोटा, **4. पिडावा :** पण्डित जयेश शास्त्री उदयपुर, **6. उदयपुर (मु. मंडल) :** पण्डित देवेन्द्रकुमारजी बिजौलिया, **7. उदयपुर (सेक्टर–11) :** ब्र. नन्हे भैया सागर, **8. उदयपुर (नेमीनगर) :** डॉ. नेमचन्दजी दिल्ली, **9. उदयपुर (गायरीयावास) :** पण्डित ऋषभकुमारजी शास्त्री अमरकोट, **10. बून्दी (मलाह शाहजी का मन्दिर) :** पण्डित शौर्य शास्त्री मण्डाना, **11. जयपुर (आदर्शनगर) :** विदुषी ब्र. समता झांझरी उज्जैन, **12. अलवर (शिवाजी पार्क) :** पण्डित प्रेमचन्दजी शास्त्री, **13. भरतपुर :** पण्डित गजेन्द्रजी शास्त्री मौ, **14. अलीगढ़ :** पण्डित विमलचन्दजी जैन लाखेरी, **15. भीण्डर :** पण्डित सन्दीप शास्त्री शहपुरा, **16. प्रतापगढ़ (मुमुक्षु मंडल) :** पण्डित सौरभजी शास्त्री गढाकोटा, **17. कुशलगढ़ (तेरापंथी) :** पण्डित धर्मचंदजी जैन जयथल, **18. बिजौलिया :** पण्डित कमलचंदजी जैन पिडावा, **19. पीसांगन :** ब्र. सुकुमाल झांझरी उज्जैन, **20. देवली (आदिनाथ) :** पण्डित विकासजी शास्त्री मौ, **21. लकड़वास :** पण्डित श्रीपालजी जैन घाटोल, **22. अजमेर (वैशालीनगर) :** पण्डित अश्विन शास्त्री नानावटी, **23. अजमेर :** पण्डित रितेश जैन पिड़ावा (कोटा), **24. जयपुर :** पण्डित सोनूजी शास्त्री फिरोजाबाद, **25. उदयपुर (केशवनगर) :** पण्डित खेमचन्दजी शास्त्री उदयपुर, **26. वेर :** पण्डित पदमकुमारजी जैन कोटा, **27. बेगू :** पण्डित नितिनजी शास्त्री सूरत, **28. कोटा (मुमुक्षु आश्रम) :** पण्डित शनि शास्त्री खनियांधाना, **29. कोटा (छावनी) :** पण्डित प्रेमचन्दजी बजाज कोटा, **30. कोटा (छावनी) :** पण्डित सचिन्द्र शास्त्री गढ़ाकोटा, **31. अलवर :** डॉ. अरुणजी शास्त्री राजुरा, **32. अलवर :** पण्डित अजितकुमारजी शास्त्री फुटेरा, **33. दौसा :** पण्डित अध्यात्मप्रकाशजी शास्त्री कोलारस, **34. आनंदपुरी :** पण्डित दीपेशजी शास्त्री, **35. दौसा :** पण्डित प्रमोदकुमारजी शास्त्री टीकमगढ, **36. दूनी :** पण्डित पवनकुमारजी शास्त्री सोंरई, **37. गोविन्दगढ :** पण्डित प्रभातजी शास्त्री टीकमगढ, **38. जोधपुर :** पण्डित राजकमलजी शास्त्री परतापुर, **39. सांभरलेक :** पण्डित कृष्णचंदजी शास्त्री भिण्ड, **40. रावतभाटा :** पण्डित संजयजी शास्त्री हरसौरा, **41. उदयपुर :** पण्डित प्रक्षालजी शास्त्री उदयपुर, **42. जयपुर :** पण्डित अभिषेकजी शास्त्री कोलारस, **43. जयपुर :** पण्डित जितेन्द्र सिंह शास्त्री यादव, **44. जयपुर :** पण्डित अनिलकुमारजी शास्त्री सोजना, **45. जयपुर :** पण्डित अनिलकुमारजी शास्त्री खनियांधाना।

उत्तरप्रदेश प्रान्त

1. इटावा : पण्डित जिनेन्द्र शास्त्री उदयपुर, **2. मैनपुरी :** पण्डित पदमचंदजी गंगवाल इन्दौर, **3.खतौली :** पण्डित शिखरचन्दजी जैन विदिशा, **4.मुज्जफरनगर :** पण्डित सुरेशचन्दजी इंजी. भोपाल, **5. ललितपुर :** पण्डित पदमकुमारजी अजमेरा इन्दौर, **6. कुरावली :** पण्डित संजयकुमारजी शास्त्री खनियांधाना, **7. मेरठ (तीरगरान) :** पण्डित गुलाबचन्दजी जैन बीना, **8.बड़ौत :** पण्डित रतनचंदजी शास्त्री कोटा, **9. भौगाँव :** पण्डित रविकुमारजी ललितपुर, **10. मडावरा :** पण्डित अशीषजी शास्त्री कोटडी कोटा, **11. जैतपुरकला :** पण्डित राजीवजी शास्त्री थानागाजी, **12.कानपुर (किदवईनगर) :** पण्डित अखलेश जैन कोटा, **13. शिकोहाबाद :** पण्डित सुरेशचन्दजी अटेर रोड भिण्ड, **14. धामपुर :** पण्डित अभयजी शास्त्री ग्वालियर, **15. सहारनपुर :** पण्डित अंकितजी शास्त्री लूणदा, **16.एतमादपुर :** पण्डित प्रमोदजी मकरोनिया सागर, **17. जसवंतनगर :** पण्डित जगदीशजी पवार उज्जैन, **18.एटा :** पण्डित प्रकाशचंदजी ज्योतिर्विद मैनपुरी, **19. खतौली :** पण्डित दीपांशु शास्त्री कोटा, **20. शेरकोट :** पण्डित प्रदीपजी शास्त्री खतौली।

गुजरात प्रान्त

1.अहमदाबाद (वस्त्रापुर) : पण्डित संजयकुमारजी शास्त्री जेवर, **2.अहमदाबाद (मणीनगर) :** पण्डित मिठाभाई दोशी हिम्मतनगर, **3.अहमदाबाद (पालडी) :** पण्डित संजयजी शास्त्री बांसवाडा, **4.अहमदाबाद (ओढव) :** पण्डित सुरेशचंदजी शास्त्री गुना, **5.अहमदाबाद (मेघाणीनगर) :** पण्डित तपिशजी शास्त्री उदयपुर, **6.अहमदाबाद (आशीषनगर) :** पण्डित ऋषभकुमारजी शास्त्री, **7.हिम्मतनगर :** पण्डित नीलेशभाई मुम्बई, **8.दाहोद :** पण्डित अरहन्तप्रकाश झांझरी उज्जैन, **9. वापी :**

(शेष पृष्ठ 8 पर)

हमारी रीति-नीति

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी का अभ्युदय इस कलिकाल में आत्मार्थियों के लिए किसी अद्भुत वरदान से कम नहीं।

समयसार का उद्घाटन, गहन तत्त्व का प्ररूपण, निरंतर आत्म चिंतन, पठन और पाठन यह है पूज्य गुरुदेवश्री का प्रदेय।

हम उनकी मशाल को थामकर ही आगे बढ रहे हैं।

वीतरागी देव, शास्त्र, गुरु एवं तत्त्वज्ञान के प्रति हमारी गहरी आस्था एवं सम्पूर्ण समर्पण है एवं उसी का प्रचार और प्रसार हमारा एकमात्र उद्देश्य है। हमारी मान्यता है कि यही एकमात्र मार्ग है, जो इस भगवान आत्मा को भवभ्रमण के अभिशाप से मुक्ति दिलाकर सिद्धशिला तक पहुँचाने में सक्षम है, यही वह कार्य है जिसे करने में इस जीवन की सफलता है।

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट आत्मार्थियों की अनूठी संस्था है, जो पिछले 45 वर्षों से सतत गहन तत्त्वप्रचार के काम में संलग्न है।

अनेकों अवरोध आये पर हम अटके नहीं।

अनेकों भुलावे आये मगर हम भटके नहीं।

अनेक दबाव आये पर हम झुके नहीं।

अनेक प्रलोभन मिले पर हम बिके नहीं।

अनेकों विपत्तियाँ आयीं पर हम टूटे नहीं।

उकसाने के अनेक प्रयास हुये पर हम रूठे नहीं।

जिस उद्देश्य को लेकर, जिस रीति–नीति के साथ हम प्रारम्भ हुये थे, आज तक उसी पर कायम हैं और सदा रहेंगे।

हम थोड़े से लोग साथ चले थे, लोग जुड़ते गये, कारवां बढता गया।

बहुत लोग जुड़े, कुछ बिछुड़े और कुछ भटक भी गये; पर हम जैसे थे वैसे ही रहे, अपने पथ पर बढते रहे।

समाज में करने को काम बहुत हैं, कुछ बहुत आवश्यक भी हैं और बहुत अच्छे भी, पर हमने जो काम अपने हाथ में लिया है, वह अनूठा है।

अनेकों सुझाव, दबाव, आदेश और प्रलोभन आते रहे कि हम कुछ और काम अपने हाथ में लें, अन्य गतिविधियों से भी जुड़ें, पर हम उनसे पृथक ही रहे।

इसलिये नहीं कि वे काम करने योग्य नहीं हैं, पर इसलिये कि अन्य अनेकों लोग भी वे काम कर ही रहे हैं।

हमने जो अनूठा काम अपने हाथ में लिया है, वह अनुपम है और अन्य लोग उस काम में संलग्न नहीं हैं।

आज तो फिर भी और कुछ लोग और कुछ संस्थाएँ इसमें जुड़ी हैं, पर जब हमने शुरुआत की थी, तब तो हम अकेले ही थे।

हमारा संकल्प है कि हम इस मार्ग से च्युत नहीं होंगे।

हालांकि यह काम सर्वोत्कृष्ट है, तथापि आलोचनाएँ भी होती हैं, विरोध भी होता, प्रतिरोध भी होता है और अवरोध भी आते हैं।

हमारी नीति रही है कि हम इन सब से प्रभावित नहीं होते, हम रुकते नहीं, हम अटकते नहीं, हम भटकते नहीं।

हम किसी वाद–विवाद में पड़ते नहीं, हमारा काम ही उन सबके लिए हमारा जवाब है, हम सदा इसी नीति पर कायम रहेंगे।

विवादों में न उलझना हमारी कमजोरी नहीं, हमारी शक्ति का प्रतीक है।

अपने कार्य करते रहना हमारी वीरता है और उससे विचलित नहीं होना हमारी धीरता।

आस्था और विचार भिन्नता के तो अनेक कारण हो सकते हैं और एक विशाल समाज के सदस्यों के बीच – ऐसी विचार भिन्नता स्वाभाविक ही है, पर हमारा यह दृढ विश्वास है कि बिना किसी लौकिक आकांक्षा के, जो लोग धर्म और अध्यात्म से जुड़े हैं, वे सभी आत्मकल्याण की भावना से जुड़े हैं, वे सभी हमारी ही तरह आत्मार्थी ही हैं और आत्मार्थियों से द्वेष कैसा? वे तो वात्सल्य के पात्र हैं और इसलिये किसी से शत्रुता करना या किसी के प्रति द्वेष पालना या द्वेषपूर्ण व्यवहार करना न तो हमारी वृत्ति है, न प्रवृत्ति और न ही हमारी नीति, हम सदा इसी नीति पर कायम रहेंगे।

हमारी दृढ मान्यता है कि –

आत्मकल्याण विशुद्ध व्यक्तिगत मामला है, इस मामले में किसी अन्य का किसी से सरोकार नहीं हो सकता है, जिनका सम्बन्ध आत्मकल्याण से है, ऐसी दार्शनिक मान्यताएं सबका अपना व्यक्तिगत अधिकार है, इनका प्रभाव लोकोत्तर है, इनका सम्बन्ध भव के अभाव से है, इनमें दखलंदाजी करने का अधिकार किसी को कैसे दिया जा सकता है, उसमें किसी का दखल नहीं होना चाहिये, इन विषयों में हम कभी किसी का दबाव और दखल स्वीकार नहीं करेंगे।

उपासना पद्धति और पूजा–अर्चना की विधि सबकी अपनी–अपनी परम्पराओं पर, सबके अपने–अपने सोच और विश्वास पर निर्भर करती है, उनमें किसी भी स्तर पर बाहरी दबाव उचित नहीं है, इन विषयों में न तो हम किसी पर जोर जबरदस्ती करेंगे और न ही किसी की जोर जबरदस्ती स्वीकार करेंगे, हम चाहते हैं कि सब लोग अपने–अपने स्थानों पर प्रचलित पद्धति के अनुसार अपनी आस्था और विश्वास के अनुरूप पूजा–उपासना के लिए स्वतंत्र रहें।

सामाजिकता मनुष्य मात्र की आवश्यकता है और हम सभी आत्मार्थियों की भी सभी तरह की सामाजिक आवश्यकताएँ हैं, सामाजिक एकता और अखंडता में हमारा दृढ विश्वास है, हम किसी भी तरह के विग्रह में विश्वास नहीं करते, न तो दार्शनिक आस्थाओं के आधार पर न ही दार्शनिक आस्थाओं की कीमत पर और न ही उपासना पद्धति के आधार पर या किसी अन्य सामाजिक रीति–रिवाजों के आधार पर। उक्त सभी विषयों को अपनी–अपनी जगह कायम रखते हुये, बिना किसी शर्त, दबाव और बल प्रयोग के सामाजिक एकता और अखंडता में हमारी गहरी आस्था है।

हम कभी भी किसी भी सामाजिक विग्रह का कारण नहीं बनेंगे और सदा ही बिना शर्त सामाजिक एकता के लिए कार्य करते रहेंगे।

हम अब तक भी अपनी रीति–नीतियों पर दृढतापूर्वक चले हैं और अपने सिद्धांतों से समझौता किये बिना सामाजिक एकता कायम रखने में और उसके विकास में सफल रहे हैं और आगे भी ऐसा ही करते रहेंगे।

आत्मोत्थान तो नितांत व्यक्तिगत प्रक्रिया है,पर तत्त्वप्रचार के इस अभियान में अकेले ही बहुत कुछ कर पाना संभव नहीं था, पूज्य गुरुदेवश्री का वरद हस्त तो हमारे ऊपर था ही, हमारी इस लम्बी यात्रा में हमारी उक्त

(शेष पृष्ठ 8 पर)

रहस्य : रहस्यपूर्ण चिट्ठी का

99 तीसरा प्रवचन – डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

आत्मानुभूति के बाद के विश्वास में जो दृढ़ता है, वह दृढ़ता उसके पहले होनेवाले विश्वास में कैसे हो सकती है ? यही कारण है कि उसे सम्यक् श्रद्धान नहीं कहा जा सकता।

इसी बात को हम जरा और गहराई से समझें। हमें कोई भयंकर बीमारी है। उसके इलाज के लिए हमने योग्य डॉक्टर की खोज की, अनेक लोगों से बहुत जानकारी जुटाई, खर्चेकी परवाह किये बिना सर्वश्रेष्ठ डॉक्टर के पास इलाज कराने के लिए पहुँचे। उसने अनेक प्रकार की जाँचें कराईं, उसमें भी हजारों रुपये खर्च हुए। फिर उसने दवा लिखी और कहा कि जैसी विधि हमने बताई है, उस विधि के अनुसार इस दवा को १ माह तक सुबह–शाम लीजिए। एक माह बाद दिखाने को आना।

हमने डॉक्टर से पूछा – ''डॉक्टर साहब इस दवा से मेरी तबियत ठीक तो हो जायेगी।''

डॉक्टर ने कहा –''हाँ, हाँ; अवश्य हो जावेगी। चिन्ता न करें।''

फिर भी हम कहते रहे –''डॉक्टर साहब, सचमुच ठीक हो जावेगी।''

डॉक्टर साहब ने नाराज होते हुए कहा – ''क्या हम पर विश्वास नहीं है ?''

हम कहने लगे – ''क्या बात करते हैं, विश्वास न होता तो आपके पास आते ही क्यों ? क्या हमारे यहाँ डॉक्टर नहीं हैं ? हैं, एक से बढ़कर एक हैं; पर हम उन सबको छोड़कर आपके पास आये हैं। आप पर पूरा भरोसा है; पर.....।''

''पर क्या ?''

''दर्द बहुत है, बरदाश्त नहीं होता; इसलिए बार–बार पूछने का भाव आता है।''

हम घर आ गये, डॉक्टर के बताये अनुसार दवा ली और एक माह में एकदम सही हो गये।

अब जरा सोचिये। जैसा विश्वास अब हुआ, वैसा विश्वास उस समय था क्या ? नहीं, नहीं; क्योंकि होता तो डॉक्टर से बार–बार पूछते नहीं। और विश्वास होता ही नहीं तो उस डॉक्टर के पास जाते ही नहीं, उसके कहे अनुसार जाँचें भी नहीं कराते, दवा भी नहीं खाते; इसलिए इस विश्वास को अविश्वास नहीं कह सकते, कहेंगे तो विश्वास ही, पर आराम होने के बाद जैसा नहीं।

दोनों विश्वासों के बीच होनेवाले इस अन्तर को हमें जानना ही होगा। दवा खाने और आराम होने के पहले के विश्वास को भी साधारण मत समझिये; क्योंकि उसके भरोसे ही हम डॉक्टर से ऑपरेशन कराने को तैयार होते हैं, ऑपरेशन की टेबल पर खुशी–खुशी लेट जाते हैं और डॉक्टर को जो जैसी चीरफाड़ करनी हो, करने देते हैं। उसके आदेश का अक्षरश: पालन करते हैं; जो दवा वे देते हैं, उसे बिना मीन–मेख किये खाते हैं; जो परहेज वे बताते हैं, उसका पूरी तरह पालन करते हैं।

इतना सबकुछ बिना मजबूत विश्वास के नहीं हो सकता। उक्त विश्वास के बिना हमारा इलाज होना भी संभव नहीं है।

इसीप्रकार देशनालब्धि के पूर्व देव–शास्त्र–गुरु के प्रति होनेवाले विश्वास में और आत्मानुभूति के उपरान्त होनेवाले विश्वास के अन्तर को भी पहिचानना होगा।

अनुभूति के पहले देव–शास्त्र–गुरु के प्रति होनेवाले विश्वास को अविश्वास तो कह ही नहीं सकते; साथ में उसकी उपेक्षा भी नहीं की जा सकती; क्योंकि हम उसके भरोसे ही तो सारे जगत से मुख मोड़कर, स्वयं पर समर्पित होते हैं। जिस जगत को आजतक अपना जाना, माना था, उसी में जम रहे थे; उससे मुख मोड़कर, उसे छोड़कर अपने आत्मा में अपनापन स्थापित कर लिया, उस पर ही पूर्णत: समर्पित हो गये – यह सब कमाल उसी का फल है। अत: उसकी उपेक्षा करना भी समझदारी का काम नहीं।

आगम के अध्ययन, सद्गुरु के उपदेश और तर्क की कसौटी पर कसने के उपरान्त आत्मा–परमात्मा, सात तत्त्व और देव–शास्त्र–गुरु पर जो विश्वास हमें होता है अर्थात् देशनालब्धि से हमें जो विश्वास उत्पन्न होता है; उसके बल पर ही प्रायोग्यलब्धि में प्रवेश होता है, करणलब्धि का प्रारंभ होता है। इसके बिना प्रायोग्य और करणलब्धि में प्रवेश–प्रारंभ संभव नहीं है।

इसीप्रकार देव–शास्त्र–गुरु पर विश्वास बिना आगम का सेवन और गुरूपदेश का श्रवण भी कैसे होगा ?

तात्पर्य यह है कि सम्यक् विश्वास–श्रद्धान होने के पहले भी जो विश्वास और श्रद्धान होता है; उसकी उपेक्षा करना उचित नहीं है, संभव भी नहीं है; पर आगमादि के आधार पर होनेवाले विश्वास–श्रद्धान और आत्मानुभूति के उपरान्त होनेवाले विश्वास–श्रद्धान में जो महान अन्तर है, वह तो है ही; उसकी उपेक्षा करना भी ठीक नहीं है।

आप सब अपना काम–धाम छोड़कर यहाँ आ गये हैं, भगवान की पूजा–भक्ति कर रहे हैं, हमारा प्रवचन सुन रहे हैं; क्या यह सब बिना विश्वास के हो रहा है ? इसे हम अश्रद्धा तो नहीं कह सकते; पर जब आपको आत्मानुभूति हो जावेगी और तब आपको हमारी बात पर भी जैसा विश्वास होगा, वैसा आज नहीं हो सकता।

सारा जगत आत्मानुभूति से पहले होनेवाले इस विश्वास को ही व्यवहारसम्यग्दर्शन मानता है; इसी वजह से यह कहता है कि व्यवहार–सम्यग्दर्शन पहले होता है और निश्चयसम्यग्दर्शन बाद में।

वस्तुत: बात यह है कि जबतक सम्यग्दर्शन की घातक मिथ्यात्वादि प्रकृतियों का क्षय, क्षयोपशम या उपशम नहीं होता; तबतक सम्यग्दर्शन हो ही नहीं सकता। करणानुयोग के इस कथन की उपेक्षा करना ठीक नहीं है, संभव भी नहीं है।

मिथ्यात्व की भूमिका में होनेवाले उक्त श्रद्धान–ज्ञान को व्यवहार से ही सही, पर सम्यग्दर्शन कैसे कहा जा सकता है ?

वस्तुत: बात यह है कि मिथ्यात्व की भूमिका में आगम और गुरूपदेश के आधार पर होनेवाला श्रद्धान–ज्ञान सही तो है, पर सम्यक् नहीं; क्योंकि उसकी सत्यता का आधार तो दिव्यध्वनि के आधार पर रचा गया आगम और ज्ञानी गुरु का ज्ञान है; पर सम्यक्पना का अभाव सम्यक्त्व के सन्मुखमिथ्यादृष्टि में विद्यमान मिथ्यात्व के कारण है।

जिसप्रकार प्रमाण–पत्र की प्रतिलिपि सही तो है, पर जबतक उसे राजपत्रित अधिकारी प्रमाणित नहीं कर देता; तबतक कार्यकारी नहीं है। उसीप्रकार निश्चयसम्यग्दर्शन के पहले होनेवाला व्यवहार सम्यग्दृष्टियों के समान होने पर भी सम्यक् नहीं है; क्योंकि उसमें सम्यक्पना निश्चय–सम्यग्दर्शन होने पर ही आयेगा।

मैं आपसे एक प्रश्न पूछता हूँ कि जिस लड़के से आपने अपनी लड़की की सगाई कर दी, पर अभी शादी नहीं हुई; ऐसी स्थिति में वह लड़का आपका जमाई है या नहीं, आपकी लड़की का पति है या नहीं ?

अरे, भाई ! वह लड़का आपकी लड़की का पति कहा जाने पर भी अभी वह पति जैसा व्यवहार नहीं कर सकता। उसीप्रकार यद्यपि **करणलब्धिवाला अंतर्मुहूर्त में नियम से सम्यग्दृष्टि होनेवाला है; तथापि उसे अभी सम्यग्दृष्टि नहीं माना जा सकता। अभी तो वह पहले गुणस्थान में ही है।**

यद्यपि वह अभी अपनी लड़की का पति नहीं है; अत: उनमें परस्पर पति–पत्नी का व्यवहार भी संभव नहीं है; तथापि हम उसका जमाई जैसा ही सम्मान करते हैं, उससे जमाई जैसा ही व्यवहार करते हैं; पर वह व्यवहार वास्तविक व्यवहार नहीं है, वास्तविक व्यवहार तो तभी होगा, जब हमारी लड़की के साथ उसके सात फेरे पड़ जावेंगे। छठवें फेरे तक जो व्यवहार है, वह एक प्रकार से ऊपरी–ऊपरी ही है, व्यवहाराभास है; पर नासमझ लोग उसे व्यवहार ही समझते हैं।

इसीप्रकार यद्यपि आत्मानुभूतिपूर्वक समयग्दर्शन की उपलब्धि होने के पूर्व देव–शास्त्र–गुरु की श्रद्धा–भक्ति का व्यवहार देखा जाता है, पर वह वास्तविक व्यवहारसम्यग्दर्शन नहीं है। **वास्तविक व्यवहारसम्यग्दर्शन तो निश्चयसम्यग्दर्शन के होने के साथ ही प्रगट होता है।**

माँ के बेटा पैदा हुए बिना दादी का पोता कैसे हो सकता है ? उसीप्रकार निश्चयसम्यग्दर्शन के बिना व्यवहार सम्यग्दर्शन कैसे हो सकता है ?

यह संक्षेप में सम्यग्दर्शन की बात हुई; अब सम्यग्ज्ञान की बात करते हैं। उक्त संदर्भ में पण्डित टोडरमलजी लिखते हैं –

''तथा ऐसा सम्यक्त्वी होने पर जो ज्ञान पंचेन्द्रिय व छट्ठे मन के द्वारा क्षयोपशमरूप मिथ्यात्वदशा में कुमति–कुश्रुतिरूप हो रहा था, वही ज्ञान अब मति–श्रुतरूप सम्यग्ज्ञान हुआ। सम्यक्त्वी जितना कुछ जाने वह जानना सर्व सम्यग्ज्ञानरूप है।

यदि कदाचित् घट–पटादिक पदार्थों को अयथार्थ भी जाने तो वह आवरणजनित औदयिक अज्ञानभाव है। जो क्षयोपशमरूप प्रगट ज्ञान है, वह तो सर्व सम्यग्ज्ञान ही है; क्योंकि जानने में विपरीतरूप पदार्थों को नहीं साधता। सो यह सम्यग्ज्ञान केवलज्ञान का अंश है; जैसे थोड़ा–सा मेघपटल विलय होने पर कुछ प्रकाश प्रगट होता है, वह सर्व प्रकाश का अंश है।

जो ज्ञान मति–श्रुतरूप हो प्रवर्त्तता है, वही ज्ञान बढ़ते–बढ़ते केवलज्ञानरूप होता है; सम्यग्ज्ञान की अपेक्षा तो जाति एक है।''[१]

यद्यपि मिथ्यात्व अवस्था में देव–गुरु के उपदेश एवं जिनवाणी के स्वाध्याय के माध्यम से जो तत्त्वज्ञान होता है, स्व–पर भेदविज्ञान होता है, त्रिकाली ध्रुव भगवान आत्मा का स्वरूप समझ में आता है; वह सब **परम सत्य होने पर भी जबतक आत्मानुभूतिपूर्वक सम्यग्दर्शन नहीं हो जाता, तबतक सम्यग्ज्ञान नाम नहीं पाता;** क्योंकि ज्ञान का सम्यक्पना सम्यग्दर्शन के आधार पर सुनिश्चित होता है। **(क्रमश:)**

तात्पर्य यह है कि सम्यग्दृष्टि का सम्पूर्ण ज्ञान सम्यग्ज्ञान है और मिथ्यादृष्टि का सम्पूर्ण ज्ञान मिथ्याज्ञान है। इसप्रकार हम देखते हैं कि ज्ञान का सम्यक्पना सत्यता के आधार पर नहीं, सम्यग्दर्शन के आधार पर है।

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, पृष्ठ ३४२

जैन तत्त्वज्ञान अब रेडियो पर भी

● हिन्दी/गुजराती भाषा में गुरुदेवश्री कानजीस्वामी एवं अन्य विशिष्ट विद्वानों के प्रवचनों/भक्ति/बालकक्षा इत्यादि धार्मिक कार्यक्रमों का 24 घंटे 7 दिन प्रसारण।

● जैन रेडियो सुनने के लिए टाइप करें –

www.Jainmedialive.com

e-mail - info@jainmedialive.com

(पृष्ठ 4 का शेष...)

पण्डित रमेशचन्दजी शास्त्री जयपुर, **10.अहमदाबाद (नरौडा) :** ब्र. पुष्पाबेन झांझरी उज्जैन, **11. अहमदाबाद (बहिरामपुरा) :** पण्डित रवीन्द्रजी शास्त्री अंबड, **12.अहमदाबाद (अमराईवाडी) :** पण्डित उदयमणि शास्त्री भिण्ड, **13.अहमदाबाद (पार्श्वनाथ चैत्यालय) :** पण्डित रमेशचंदजी मंगल सोनगढ, **14.अहमदाबाद नरौडा :** ब्र. ज्ञानधारा झांझरी उज्जैन, **15.नवसारी :** पण्डित साकेतजी शास्त्री जयपुर, **16.सूरत :** पण्डित अरुणकुमारजी शास्त्री मौ, **17.चैतन्यधाम :** पण्डित सचिनजी शास्त्री गढी, **18.दाहोद :** पण्डित राकेशजी दोशी शास्त्री परतापुर, **19.अहमदाबाद :** पण्डित अभिषेकजी शास्त्री सिलवानी।

अन्य प्रान्त

1.कोलकाता : पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बाँसवाड़ा, **2.बेलगाँव :** पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा, **3.बैंगलौर :** पण्डित धनसिंहजी ज्ञायक पिड़ावा, **4.रानीपुर (हरिद्वार) :** पण्डित मनोजजी मुजफ्फरनगर, **5.हिसार :** डॉ. ऋषभजी शास्त्री ललितपुर, **6.लुधियाना :** पण्डित विवेक मोदी सागर, **7.हुबली :** पण्डित शीतलजी मुगद नवलूर, **8.बेलगाँव :** पण्डित मिथुन पुदाली शास्त्री शिरगुप्पी, **9.बेलगाँव :** पण्डित सुधर्म शास्त्री बेलगाँव, **10.नाहन जिला सिरमौर (हि.प्र.) :** पण्डित प्रवेश भारिल्ल करेली, **11.एरनाकुल्लम (केरल) :** पण्डित महावीर शास्त्री टोकर, **12.यमुनानगर (हरियाणा) :** पण्डित अंचलजी शास्त्री ललितपुर, **13.बागेवाड़ी (गुरुकुल) :** पण्डित संतोषजी शास्त्री जयपुर, **14.पानीपत :** पण्डित विपिनजी शास्त्री फिरोजाबाद, **15.देहरादून (विकासनगर) :** पण्डित अनुभव जैन केलवाडा, पण्डित नवीन जैन मौ, **16.कोलकाता :** पण्डित अमितजी शास्त्री फुटेरा, **17.मदुरई :** पण्डित अजयजी शास्त्री पीसांगन, **18.बैंगलोर :** पण्डित किशोरजी शास्त्री बंड, **19.दावणगेरे :** पण्डित भरतजी शास्त्री कोरी, **20.खैरागढ :** पण्डित प्रवीणजी शास्त्री रायपुर, **21.बीजापुर :** पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री उगार, **22. चम्पापुर :** पण्डित जागेशजी शास्त्री जबेरा।

दिल्ली

1. पण्डित तेजकुमारजी गंगवाल इन्दौर, 2. पण्डित सुनील धवल भोपाल, 3. पण्डित कैलाशचन्दजी बीकानेर, 4. पण्डित पंकज शास्त्री बण्डा, 5. पण्डित राहुल शास्त्री दमोह, 6. पण्डित अभिनवजी मैनपुरी, 7. पण्डित सौरभजी शास्त्री शाहगढ़, 8. पण्डित देवांग गाला मुम्बई, 9. पण्डित अशोकजी शास्त्री उज्जैन, 10. पण्डित रोहितजी शास्त्री आनन्दपुरी, 11. पण्डित चैतन्यजी शास्त्री जबलपुर, 12. पण्डित अभिषेकजी शास्त्री आंजना, 13. पण्डित गौरवजी शास्त्री बावली, 14. पण्डित मेघवीरजी शास्त्री घाटोल, 15. पण्डित सौरभजी शास्त्री परतापुर, 16. पण्डित नीरजी शास्त्री नोगामा, 17. पण्डित रॉकीजी शास्त्री डडुका, 18. पण्डित सुमितजी शास्त्री छिंदवाड़ा, 19. पण्डित अविनाशजी शास्त्री छिंदवाड़ा, 20. पण्डित धीरजजी शास्त्री जबेरा, 21. पण्डित निशंक जैन टीकमगढ़, 22. पण्डित राहुल शास्त्री बदरवास, 23. पण्डित अरविन्द शास्त्री टीकमगढ़, 24. पण्डित दीपकजी शास्त्री खनियाँधाना, 25. पण्डित विक्रान्त शास्त्री भगवाँ, 26. पण्डित तन्मय शास्त्री भोपाल, 27. पण्डित सचिन शास्त्री जबेरा, 28. पण्डित अविरल सिंघई विदिशा, 29. पण्डित अंकुर जैन मैनपुरी कोटा, 30. पण्डित समकित बांझल गुना कोटा, 31. पण्डित समकित मोदी सागर कोटा, 32. पण्डित नीलेश शास्त्री गुहाटी, 33. पण्डित समकित मंगलार्थी दिल्ली, 34. डॉ. अशोकजी गोयल बण्डा, 35. पण्डित दीपेशजी शास्त्री गुढा, 36. ऋषभकुमारजी शास्त्री उस्मानपुर, 37. डॉ. अनेकान्तजी शास्त्री वाराणसी, 38. डॉ. वीरसागरजी शास्त्री गुढाचंद्रजी, 39. डॉ. सुदीपजी शास्त्री ललितपुर।

(पृष्ठ 5 का शेष...)

रीति-नीति से सहमति रखने वाले बहुत से महानुभावों का यथायोग्य आशीर्वाद मिला, सहयोग मिला, सेवायें मिली और अनुमोदना मिली।

जिनवाणी के प्रवक्ताओं, वक्ताओं और शिक्षकों का समाज पर असीम उपकार है और तत्त्वप्रचार का यह महान कार्य सिर्फ उन्हीं के समर्पण का प्रतिफल है, वे ही हमारी शक्ति है और वे ही हमारे विश्वास के केन्द्र बिन्दु। प्रत्येक व्यक्ति का नामोल्लेख तो संभव नहीं, पर हम उन सभी के प्रति कृतज्ञ हैं।

हमारी कार्यकर्ताओं की बड़ी टीम के वे सभी सदस्य, हमारे कार्यालय में कार्यरत सदस्य, जिनका जीवन ही इस सबके प्रति समर्पित है या यूं कहिये कि यही उनका जीवन है, वे इस संस्था की रीढ की हड्डी (back bone) हैं, जिन्होंने सदा परदे के पीछे रहकर ही काम किया है, उन्होंने न तो तकलीफों की परवाह की और न ही शाबासी की चाह रखी, उनका योगदान हमें सदा ही अविस्मरणीय रहेगा।

हमें सर्वाधिक बल मिलता है आप सभी के सहयोग से, सभी लोग हमारी गतिविधियों से गहराई के साथ जुड़े हैं एवं सम्पूर्ण समर्पण के साथ तन, मन और धन से आप सभी का सहयोग हमें समस्त गतिविधियों के संचालन की शक्ति प्रदान करता है।

हम आशा करते हैं कि उक्त सभी वर्गों से भविष्य में भी हमें यथावत सहयोग मिलता रहेगा और पूज्य गुरुदेवश्री द्वारा उद्घाटित वीतरागी तत्त्वज्ञान की यह गंगा चिर काल तक यथावत प्रवाहित रहेगी।

आइये हम सभी इस अभियान को दीर्घजीवी बनाने का संकल्प लें।

- परमात्मप्रकाश भारिल्ल

कार्यकारी महामंत्री : पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

प्रकाशन तिथि : 13 अगस्त 2012

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127